International Journal of Applied Research 2016; 2(1): 1010-1011

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(1): 1010-1011
www.allresearchjournal.com
Received: 19-11-2015
Accepted: 29-12-2015

डॉ. सुशील निम्बार्क
सह आचार्य चित्रकला, राज मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. सुशील निम्बार्क
सह आचार्य चित्रकला, राज मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

विरासत विस्मृत से कमजोर होती सांस्कृतिक संरचना

डॉ. सुशील निम्बार्क

प्रस्तावना

विरासत हमारा जीवन है, हमारा अस्तित्व है, आगे बढ़ने की हमारी दिशा है। अगर विरासत नहीं है तो न हम हैं और न कोई हमारा मूल्य है। इसीलिये जब हम अपनी विरासत से भटकने लगते हैं तो लगता है कि हम बेसहारा हो रहे हैं, हमसे हमारी धरती छीनी जा रही है, हमारा देश छीना जा रहा है, हमें हमारी संस्कृति से दूर ले जाया जा रहा है। हम घर से बेघर हो रहे हैं। विरासत हमारी आनुवंशिकता है। वह हमें हमारे पुरखाओं से जीवन के अनेक रूपों में प्राप्त हुई है। सुख दुःख और के अनुभव मिले हैं तो विकास की राह पर आगे बढ़ने की शक्ति हमें उनसे ही मिली है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जैसे चार पुरुषार्थ भी हमें उन्हीं से प्राप्त हुए हैं। जो ज्ञान है, वह वेद ही तो है। वह भी हमें उनसे मिला है।

विरासत के पर्याय में आज एक लोकप्रिय शब्द हमारे व्यवहार में आ गया है – हेरिटेज। यह मूलतः फ्रेंच भाषा का शब्द हैं, जो अंग्रेजी की राह से चलकर हमारे देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी का साथी बन गया है। इन दिनों यह हेरिटेज शब्द बदलते व्यावसायिक परिदृश्य में परिवर्तित संस्कृति का सहारा बनकर इतना प्रभावी हो गया है कि उसके समक्ष विरासत के अन्य हमारे सभी पर्यायवाची शब्द तिरस्कृत से हो गये हैं। हमारी बोलचाल में यह इतना हावी हो गया है कि जो हेरिटेज की अवधारणा में नहीं आता, उसे भी हेरिटेज के दायरे में लाने पर हमें कोई खास खुशी मिलती है, कोई खास गर्व भी हमें महसूस होने लगता है। आजकल यह शब्द होटल व्यवसाय में अधिक मूल्यवान हो गया है। यह वह हेरिटेज है, वह फलाँ हेरिटेज है, वह भी एक हेरिटेज है, जिसमें हमने दो रातें बिताई थीं। देखा जाए तो यह हमारे व्यवसाय की एक गम्भीर रुग्णता है, जो हमें धन कमाने की ओर उन्मुख कर हमारे मानसिक उत्कर्ष को निम्न धरातल पर ले जा रही है। हेरिटेज को होटल या ढाबे से जोड़कर क्या हम यह बताना चाहते हैं कि ये राजमहल या ये हवेलियाँ गत एक लम्बे समय से रोटी का धंधा करते आ रहे है विरासत या हेरिटेज का अर्थ हमारी संस्कृति का मूल्यवान घटक है। वह हमें हमारे पुरखाओं से जिस शर्त के तहत मिला है, उसका सीध सा मतलब है कि हम उसे जितना बन सके, उत्कर्ष पर ले जाएँ, उसका अपकर्ष न करें और न होने दें।

भारतीय वाङ्मय में विरासत के अर्थ में प्रमुख रूप से जो शब्द उपयोग में लाये जाते रहे, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं– धरोहर, निक्षेप, न्यास, थाती आदि। भाषा भी हमें विरासत में मिली है अतः अपने भाषा वैज्ञानिक अध्ययन में भाषाविद डॉ. सुनीत कुमार चाटुर्ज्या ने इसी अर्थ– सन्दर्भ में संस्कृत के रिक्थ शब्द का भी प्रयोग किया है। ये सभी शब्द समानार्थी हैं और अपनी–अपनी बदलती अर्थ – छाया में इनका उपयोग गत सुदीर्घ समय से हमारे यहाँ होता आया है। शाकुन्तलम् नाटक में महाकवि कालिदास ने इस शब्द का सटीक अर्थ में प्रयोग कर तत्कालीन कुलपति ऋषि कण्व की अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान की है। उन्होंने विरासत या धरोहर के रूप में न्यास शब्द की अर्थवत्ता को प्रत्यक्ष किया है। वे कहते हैं। –

अर्थो हि कन्या परकीय एवं तामद्य संप्रेष्य परिग्रहीतुः।
जातो ममाऽयं विशदः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा।।

ऋषि कण्व को उस दिन परम आन्तरिक सुख अनुभव हुआ, जिस दिन वे अपने द्वारा बेटी की तरह परिपालित अप्सरा–पुत्री शकुन्तला का विवाह कर उसे राजा दुष्यन्त को सौंप चुके उन्हें तब महसूस हुआ कि कन्या धरोहर के रूप में पराया धन ही होती है। न्यास, निक्षेप अथवा विरासत शब्द में जहाँ अपनी विश्वसनीयता का भाव निहित होता है, वहाँ अपने दायित्व का भी ऊँचे धरातल पर बोध विद्यमान है, जो व्यक्ति की उत्कर्ष–परायणता को अंकित करता है।

हेरिटेज के सन्दर्भ में उत्कर्ष और अपकर्ष का यह चिन्तन तब और अधिक सुस्पष्ट हो सकेगा, जब हम राजस्थान के दक्षिणी अचल मेवाड की बात करें। यहाँ डेढ़ हजार वर्ष तक बापा के राजवंश सिसौदिया क्षत्रियों का अक्षुण्ण साम्राज्य रहा, जिसमें बहत्तर शासक हुए। लेकिन सभी शासक मील के पत्थर नहीं बने। मील का पत्थर तो केवल एक बना महाराणा प्रताप। महल और दुर्ग तो महाराणा प्रताप से पूर्व और बाद में भी कई राजाओं ने बनवाये, लेकिन प्रताप तो न महलों में रहा और न दुर्गों में। वह उन्हें छोड़कर उन गिरि–कन्दराओं में रहा, जहाँ अपने आदर्श कृत्यों की स्थापना की जासकती थी तथा जहाँ से स्वाधीनता स्वातंत्र्य–प्रेम और स्वाभिमानी जीवन का देश को सन्देश दिया जा सकता था ऐसा ही कुछ चित्तौड़गढ़ की रानी पद्मिनी और बाद में हुई मीराबाई की उपलब्धियां रही हैं। मुझे याद है, कुछ वर्षों पूर्व जब मैं पूना गया था। वहाँ गाडोलिया लुहार अपनी घुमन्तू जीवन छोड़कर स्थायी रूप से रहने लगे हैं।

उनके हर घर पर उनके पूजा पाठ की सामग्री में दो छोटी–छोटी डिब्बिया हैं। दोनों में चित्तौड़गढ़ की मिट्टी भरी हुई है। वे बताते हैं कि एक में पद्मिनी के जौहर की पवित्र राख है और दूसरी में मीरा ने जहाँ–जहाँ नृत्य किया था, उसके स्पर्श से पवित्र हुई चरण रज है। उनकी महिलाएँ हर रोज स्नान–ध्यान कर उन मिट्टियों से माँग सजाती हैं तो सुहाग की बिन्दी भी लगती हैं।

यह हेरिटेज है या विरासत है। देश इन्हीं यादों से ऊपर उठा है और अगर गिर रहा है तो हम अपनी विरासत का अपकर्ष कर रहे होते हैं याद करना है कि भौतिक सम्पदा तो हेरिटेज में आती ही है, विचार–धारा और जीवन के उच्च आदर्श भी हमारी विरासत के दायरे में आते हैं। देश के प्रजा–जन की सुरक्षा व्यवस्था एवं देश के उत्थान तथा कुशल–क्षेम की जिस चाहत में ये राजमहल या दुर्ग बने और उनके लिये जिन शिल्पियों और श्रमिकों ने जो अपना पसीना बहाया था, क्या उसमें देश भक्ति की गन्ध नहीं थी? लेकिन आज उस भावना की महक कहीं डूबती – मुरझाती नजर आती है। जब उन महलों– दुर्गो में होटल चल रहे होते हैं और विलासिता के तमाम साधन–प्रसाधन जुटाये जाकर धन की खदान के रूप में उनका उपयोग हो रहा है।

ये ही हालात उन हवेलियों के भी हैं, जिनका रंग–ढंग अपने समय में देश की शान–शौकत और मान–सम्मान के लिये हुआ करता था। आज हर गली में बनी वे ही हवेलियाँ अतिथिदेवो भव के छद्मवेश में पैसा कमाने में जुटी हुई हैं। इन हवेलियों की तुलना में तो कहीं वे हवेलियाँ सार्थक और धन्य मानी जा सकती हैं, जिनमें पुष्टिसम्प्रदाय के आराध्य श्रीनाथजी के सात स्वरूप विराजमान हैं, और जिनकी आराधना से गूँजता हवेली संगीत जन–जन के हृदय को पावन बनाता दिखाई देता है।

हेरिटेज हो या विरात उसने हमारे अन्तरंग को हमेशा से ऊपर उठने की. उच्च आदर्श को पाने की सलाह दी है, प्रेरणा दी है। लेकिन जब हम भीतर से बाहर आ गये हैं, तब हम दिनानुदिन गंगा की तरह हर रोज नीचे से नीचे गिरते चले जा रहे हैं। कहा तक गिरेंगे, यह हमें पता नहीं। हमारे भीतर का इतना अवमूल्यन हो चुका है कि जिसे हमारे पुरखाओं ने जीवन के रक्त की एक–एक बूँद से हमारी जिन्दगी को उन्नत बनाने की सोची थी, आज हम उस माया जाल में फँस गये हैं कि जहाँ से हमारा उबर पाना बहुत कठिन हो गया है। हम अपनी विरासत को खोकर इतने अन्धे बन चुके हैं कि हमारा भविष्य अब पूरी तरह अज्ञान की धुन्ध में खो गया है।

संदर्भ

1. भारत की चित्रकला, रामकृष्ण दास 1939ई.
2. मेवाड़ की चित्रांकन परम्परा 1984 ई, आर.के. वशिष्ठ
3. राजस्थान का इतिहास के.एस.गुप्ता 1968
4. जेम्स टॉड, राजस्थान का इतिहास–1995
5. राजस्थान की सांस्कृतिक परम्पराएँ, जयसिंह नीरज 1994
6. इण्डियन आर्किटेक्चर, तारापोरवाल संस एण्ड कम्पनी, 1971
7. राजस्थान का इतिहास, गोपीलाल शर्मा 1995
8. ध्वनि सिद्धान्त–डॉ. कृष्ण कुमार शर्मा